शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

मसीही जीवन व सांसारिक दृष्टिकोण
अध्याय 4 : पवित्र आत्मा के कार्य

परिचय

"मसीही जीवन व सांसारिक दृष्टिकोण" नामक यह अध्याय शिष्यों के लिये एक "अनिवार्य मॉड्यूल श्रृंखला" है। अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही जीवन के लिये आवश्यक चुनावों व व्यवहारों का मूल्यांकन करती है। परमेश्वर के वचनों के अनुसार जीवन व्यतीत करने का अर्थ है कि हम जिन बातों का चुनाव दैनिक जीवन में करते हैं, उनका प्रभाव हमारे विश्वास पर पड़ता है। इसका अर्थ प्रार्थना करना सीखना, परमेश्वर की आज्ञाओं के अनुसार व्यवहार करना, तथा दूसरों की सेवा करना सीखना है। मसीहियत की व्यवहारिकता को समझने के लिये बहुत से महत्वपूर्ण अध्याय दिये गए हैं। इन सिद्धान्तों पर और अपने जीवन में इनका प्रभावशाली ढंग से उपयोग करने पर चर्चा करने के लिये कुछ समय अलग करें।

अपेक्षित श्रोतागण

इस पाठ्यक्रम के लिये अपेक्षित श्रोतागण नये विश्वासी, जो लोग मसीहियत के बुनियादी सिद्धान्तों पर पुनः विचार करना चाहते हैं, तथा जो लोग मसीही आचरण व विश्वास की शिक्षा देने की इच्छा रखने वाले लोग हैं। इसके अलावा, मसीही विचारों में रूचि रखने वाले लोगों के लिये जो दैनिक जीवन और चुनावों के अनुकूल जीवन व्यतीत करते हैं, यह अध्याय महत्वपूर्ण होगा।

अगुवों की मार्गदर्शिका को अगुवे के रूप में आपकी तैयारी कराने में सहायता करने के लिये तैयार किया गया है। इन अध्यायों की रूपरेखा को www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व की अन्य सामग्री" के साथ उपयोग किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

मसीही जीवन व सांसारिक दृष्टिकोण

अध्याय 4 : पवित्र आत्मा के कार्य

उद्देश्य

इस अध्याय का उद्देश्य अपने जीवन में पापमय स्वभाव से संघर्ष करते समय परमेश्वर की सामर्थ्य पर निर्भर होने की ज़रूरत को समझना है। प्रतिभागी पापमय स्वभाव पर विजय प्राप्त करने के लिए ज़रूरी अनुशासन की जाँच करेंगे और पवित्र आत्मा के प्रति समर्पित होने की आदत बनाएंगे।

अगुवों की टिप्पणी

यह अध्याय हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के बारे में बताता है। पवित्र आत्मा हमारे जीवन में परमेश्वर की अलौकिक उपस्थिति तथा वह शक्ति है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की किसी भी इच्छा को पूर्ण कर सकते हैं। यदि आपके प्रतिभागी पवित्र आत्मा की भूमिका या त्रिएकता के स्वभाव से परिचित नहीं हैं, तो आप निश्चय ही इन बातों से परिचित करवाना चाहेंगे। इस विषय पर दिये गये प्रारम्भिक प्रश्न आपको यह जानने में सहायता करेंगे कि उन्हें पवित्र आत्मा के बारे में कितनी जानकारी है। यह जानकर अचम्भा होता है कि परमेश्वर ने हमारे भीतर अपनी सामर्थ्य को रखा है और उसकी सहायता से जो कुछ परमेश्वर हम से चाहते हैं, हम उस काम को पूरा कर सकते हैं। यह एक सुसमाचार है – परमेश्वर ने हमारे लिए एक रास्ता तैयार किया है जिसके द्वारा हम उससे सम्बन्ध बना सकते हैं, हम अकेले नहीं हैं।

परिचय

समूह से पूछने के लिये निम्नलिखित प्रश्नों में से दो या तीन प्रश्नों का चुनाव करें।

- क्या आपने कभी अपनी ताकत से किसी चीज़ को बदलने का प्रयास किया है? हमारे व्यक्तित्व या स्वभाव को बदलना कितना मुश्किल है?
- वह कौन सा काम है जिसे पूरा करने के लिए आपको कठिन परिश्रम करना होगा? कौन सी चीज़ मंजिल पाने में आपकी सहायता करती है?
- क्या आपने कभी किसी बुरी आदत पर विजय पायी है? विजय पाने के लिए आपके पास क्या होना जरूरी है?
- आप दूसरों पर आसानी से भरोसा कर लेते हैं या फिर आप सिर्फ खुद पर ही भरोसा करना पसन्द करते हैं? दोनों तरीकों से जीने में क्या फायदे या नुकसान हैं?
- विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा की क्या भूमिका है? क्या आप पवित्र आत्मा की कुछ खूबियां बता सकते हैं जो त्रिएकता के बाकि हिस्सेदारों से भिन्न हैं?

अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं का निर्देश दें :

सिखाएं

- **पवित्र आत्मा** : यीशु ने जगत से कूच करने से पहले प्रतिज्ञा की थी कि वह हमारे लिए एक सहायक अर्थात पवित्र आत्मा को हमारे भीतर वास करने के लिए भेजेगा।

  - **पवित्र आत्मा कौन है?**

    - वह परमेश्वर है
    - उसका अनोखा व्यक्तित्व है, वह कोई अदृश्य शक्ति नहीं है (1 कुरिन्थियों 12:11; 1 थिस्लुनिकियों 5:19; इफिसियों 4:30)
    - पवित्र आत्मा हमेशा यीशु की प्रशंसा करता व हमें सदैव यीशु मसीह का सुसमाचार सुनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।
    - वह त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति है (मत्ती 28:19; 2 कुरिन्थियों 13:14)

  - **पवित्र आत्मा क्यों उतरा?** यीशु ने प्रतिज्ञा की थी कि उसके स्वर्ग उठाये जाने के पश्चात – परमेश्वर के वरदान के रूप में पवित्र आत्मा आएगा और परमेश्वर के लोगों की सहायता करेगा।

    - यूहन्ना 16:7–15
    - प्रेरितों के काम 1:8

  - पवित्र आत्मा हमारी सहायता करता, सिखाता तथा यीशु की शिक्षाओं की याद दिलाता है। पवित्र आत्मा हमारी विजयी मसीही जीवन जीने में सहायता करता है। यदि हम पवित्र आत्मा से भरे हैं तब हम अपने पापों व शारीरिक अभिलाषाओं पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

  - विश्वास करने के क्षण से ही पवित्र आत्मा हमारे स्वर्ग में भविष्य बिताने की मुहर लगा देता हैं (इफिसियों 1:13–14)

- **पवित्र आत्मा से भरे होने का क्या अर्थ है?** इसका अर्थ परमेश्वर की सामर्थी आत्मा से भरना है। इस सन्दर्भ में "भरे होने" का अर्थ पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित, नियंत्रित तथा सशक्त होना है। इसका अर्थ है कि हमारी निर्णय शक्ति, हमारी इच्छाएं हमारे विचार उसके प्रभाव के अधीन हैं। पवित्र आत्मा द्वारा चलायमान होने पर, मसीह मुझमें व मेरे जीवन के द्वारा जीने लगता हैं।

  - यद्यपि सभी मसीहियों में पवित्र आत्मा वास करता है, लेकिन अगर उनके जीवन में अंगीकार किये बगैर पाप है और वे परमेश्वर की इच्छा व उसके वचनों के प्रति अनाज्ञाकारी हैं तो अभी तक पवित्र आत्मा का उनके जीवन पर कोई नियंत्रण नहीं है।

  - पवित्र आत्मा से भरे होने में निम्नलिखित बातों के लिए परमेश्वर पर निर्भर होना शामिल है :

    - 1 पतरस 1:14–16
    - यूहन्ना 15:8
    - यूहन्ना 16:13
    - रोमियो 8:26

- **बहुत से मसीही लोग पवित्र आत्मा से भरे हुए क्यों नहीं हैं ? :** मसीही होने के बावजूद, पवित्र आत्मा से भरे होने के लाभों से वंचित रहना सम्भव है। इसके अनेकों कारण हो सकते हैं :

  - **जानबूझकर किये जाने वाले पाप व अनाज्ञाकारिता :** बहुत से लोगों ने "आत्मा के चलाये चलना और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा नहीं करना" अभी नहीं सीखा है (गलातियों 5:16)। वे सांसारिक मसीहियों के समान जीवन यापन कर रहें हैं जो सांसारिक बातों को परमेश्वर से ज़्यादा महत्व देते हैं।

- **ज्ञान का आभाव :** ज्ञान की कमी के कारण, कुछ मसीही जन लगातार आत्मिक पराजय में जीवन व्यतीत कर रहें हैं। वे परमेश्वर के वचन से अनजान हैं और परमेश्वर की ओर से उनके प्रति योजना के प्रति बहुत थोड़ी समझ रखते हैं।

- **अविश्वास :** बहुत से मसीही विश्वास नहीं करते हैं कि परमेश्वर उनकी दैनिक जीवन की चुनौतियों में सहायता कर सकता है या करेगा।

- **भय :** कुछ लोग गहन आत्मिक अनुभव के क्षेत्रों में भयभीत हैं। सम्भवतः उन्हें परमेश्वर से डरना सिखाया गया है, इस कारण वे परमेश्वर पर भरोसा नहीं करते।

- **संदेह :** कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर उनसे असम्भव कार्य करने की मांग करेंगे। वे परमेश्वर की योग्यताओं व बेशर्त प्रेम पर संदेह करते हैं।

- **स्वार्थ :** कई लोग सोचते हैं कि परमेश्वर उनसे उनका वैभव छीन लेगा। वे उनके लिए बनाई गयी परमेश्वर की अद्भुत योजना को नहीं जान पाते (मत्ती 6:33)।

❖ **पवित्र आत्मा से भरे होने के बारे में बाइबल हमें क्या बताती है? :** उसकी आज्ञा है कि हम पवित्र आत्मा से भरे हों (इफिसियों 5:18) – पवित्र आत्मा के नियंत्रण में होने का अर्थ, दूसरी बातों के नियंत्रण में होने के विपरीत हैं।

- इफिसियों 5:3–17 को पढ़ें जहां पर मसीहियों के नकारात्मक आचरण की सूची दी गई है। ये पाप, एक व्यक्ति को पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने से रोकते हैं।

- इफिसियों 5:19–21 पढ़ें तथा आत्मा से पूर्ण जीवन के परिणाम पर नज़र डालें :

  - एक दूसरे के साथ संगति
  - आनन्दपूर्ण स्तुति व आराधना
  - परमेश्वर के लिए धन्यवाद
  - एक दूसरे के प्रति अधीन

❖ **पवित्र आत्मा के प्रति आत्म समर्पण :** याद रखें कि पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी में वास करता है। पवित्र आत्मा से भरे होने के लिए उसके अधीन होने की ज़रूरत होती है। परमेश्वर हमसे 1 यूहन्ना 5:14–15 में एक अद्भुत प्रतिज्ञा करते हैं, "कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, वह हमारी सुनता है।" इसलिए हम विश्वास के द्वारा जान सकते हैं कि जब हम पवित्र आत्मा को हमें भरने के लिए आमंत्रित करते, व अपने जीवन का नियंत्रण उसके हाथों में सोंपते हैं, परमेश्वर हमारे हृदय की प्रार्थनाओं को सुनकर जवाब देता है।

- जब आप अपने जीवन का नियंत्रण पवित्र आत्मा के हाथों में सौंप देते हैं तो आपका हृदय परमेश्वर के उद्देश्य के साथ एक होना शुरू कर देता है, आप अपने जीवन में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने लगते हैं; और वही आपकी खोये हुओं व उसके अनुग्रह की ज़रूरत महसूस करनेवालों को मसीह की गवाही देने में सहायता करता है।

- पवित्र आत्मा से पूर्ण होने के और भी व्यवहारिक परिणाम होते हैं। (मनन् करें गलातियों 5:22–23)। पवित्र आत्मा की उपस्थिति व परिपूर्णता हमारे जीवन में अच्छे फल उत्पन्न करती है (चारित्रिक गुण जिन्हें परमेश्वर पसन्द करता है) और हमें मसीह के आकर्षण गवाह बनाती है।

❖ **जयवन्त होना।** संसार हमें शिक्षा देता है कि हमें अपनी मंजिल व विजय पाने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए। इसका अर्थ है कि हमने अपनी ताकत व इच्छा शक्ति से सफलता प्राप्त की है। कई बार हम लोग अपने आप से समर्पण करते और उसे पूरा नहीं कर पाते हैं। बार–बार हम संकल्प करते हैं कि अब हम यह काम नहीं करेंगे और पुनः कुछ और करना शुरू कर देते हैं।

- किसी काम को करने में बार बार असफल होने के कारण हम हार मान जाते हैं और कई बार पूरी तरह उम्मीद छोड़ देते हैं। क्या इसका अर्थ यह है कि परिस्थितियां कभी बदल ही नहीं सकती, या हमें सदैव इसी तरह असफल होने लिए बनाया गया है। जर्कयाह 4:6 कहता है, "न तो बल से, न शक्ति से, पर मेरी आत्मा के द्वारा; यहोवा की यही वाणी है।" हमारे भीतर रहने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा, हम :
  - उन शारीरिक इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर सकते है जिन्होंने हमें बांधकर रखा है।
  - ऐसे आकर्षक व प्रिय गवाह बन सकते हैं जिन्हें हमारा संसार देखने के लिए तरसता है।
  - मसीह में बने रहने के कारण अनन्त व बने रहने वाले फल उत्पन्न कर सकते हैं।

- **पवित्र आत्मा एक सहायक :** वचन बताता है कि पवित्र आत्मा हमें दिया गया एक वरदान है। जब वह हम में और हम उस पर विश्वास करते हुए परमेश्वर में बने रहते हैं, तब हम में परमेश्वर की सामर्थ्य प्रवाहित होती है।
  - पवित्र आत्मा की सामर्थ्य को हम में उपलब्ध होने के विषय में निम्नलिखित वचनों को पढ़ें :
    - यूहन्ना 14:15–31
    - रोमियों 8:1–11, 26–27

लक्ष्य :

बड़े या छोटे समूह में, यूहन्ना 14:15–31 को पढ़े और सूची बनाएं कि पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी की किस प्रकार सहायता करता है।

चर्चा

- आपको अपने दैनिक जीवन में पवित्र आत्मा की सहायता की आवश्यकता क्यों है?
- परमेश्वर में बने रहने तथा बुराई से लड़ने के लिए अनुशासन की आवश्यकता होती है। आज आप क्या संकल्प करेंगे जिनकी वजह से आपका जीवन संसार की बातों की बजाय आत्मा की बातों से भर जाएगा? (*अपने विचारों तथा आपको घेरने वाली अभिलाषाओं पर गौर करें*)।
- समूह को अपने जीवन की उस घटना के बारे में बताएं जब आपने अपनी क्षमताओं पर भरोसा न करके पवित्र आत्मा को नियंत्रण सौंपा। उसका क्या परिणाम हुआ?
- यदि कोई मित्र आपसे पूछे कि पवित्र आत्मा को कैसे पाया जा सकता है तो आप उसे क्या सलाह देंगे?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ समाप्त करें। परमेश्वर का धन्यवाद कि पवित्र आत्मा, सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने स्वयं हमारे भीतर रहने का निर्णय किया, और हमें हमारी परीक्षाओं व बुरी इच्छाओं से बचने तथा परमेश्वर के रास्ते का चुनाव करने की शक्ति प्रदान की। परमेश्वर का धन्यवाद दें क्योंकि जब हमें प्रार्थना करना नहीं आता तब, पवित्र आत्मा हमारे लिए बिचवई की प्रार्थना करता है। परमेश्वर का धन्यवाद दें, क्योंकि बुराई से लड़ाई में आप अकेले नहीं हैं, बल्कि वह युद्व परमेश्वर का है। प्रार्थना करें कि प्रतिभागी प्रत्येक दिन को परमेश्वर की इच्छा के प्रति समर्पित होने तथा पवित्र आत्मा से भरने के लिए एक अवसर के तौर पर देंखे।